Volume-6, No. 1, Feb-2019, pp.Hin.23-26

वर्तमान युग में सतत् एवं आन्तरिक मूल्यांकन

डा0 (श्रीमती) सुनीता गौड़
असिस्टेन्ट प्रोफसर (शिक्षा संकाय)
डी0पी0बी0एस0(पी0जी0) कालेज, अनूपशहर (बुलन्दशहर) उ0प्र0

सारांश
मूल्यांकन एक व्यापक व उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, शिक्षा के क्षेत्र में इसका सर्व प्रमुख कार्य, शिक्षा को उद्देश्य केन्द्रित बनाना है। इस प्रक्रिया के आधार पर व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है, जिसका सम्बन्ध शिक्षण के मापन व सीखने के उद्देश्य से होता है। मूल्यांकन का स्वरूप अत्यन्त विस्तृत होता है। जे0 डब्ल्यू राइटस्टोन के अनुसार– ''मूल्यांकन वह नवीन तकनीकी पद है जो मापन के व्यापक प्रत्यय को प्रस्तुत करता है।'' स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– ''शिक्षा मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' 21वीं सदी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में मनुष्य–जीवन के चार स्तरों का उल्लेख किया गया है– भौतिक, बौद्धिक, मानसिक व अध्यात्मिक। अतः चहुँमुखी विकास के रूप में शिक्षा का प्रयोजन भौतिक, बौद्धिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्तरों में प्रत्येक बालक की अन्तर्निहित सम्भावनाओं को प्रकाशित करना है। सतत् व आन्तरिक मूल्यांकन का आरम्भ सर्वप्रथम भारत के मानव संसाधन मंत्रालय और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षा–प्रणाली में सुधार लाने के लिए दिनांक 20 सितम्बर 2009 को घोषित किया। यह प्रक्रिया मूल्यांकन की वह प्रक्रिया है जिसमें छात्र के विकास के सभी पक्ष शामिल हैं।
सतत् शब्द का अर्थ छात्रों की वृद्धि और विकास के अभिज्ञात पक्षों पर बल देने से है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया से सम्बन्धित है। सतत् मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की निष्पत्तियों में सुधार किया जा सकता है। सतत् मूल्यांकन में मापन एवं मूल्यांकन की अनेक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। व्यापक व समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया में छात्रों की वृद्धि व विकास के शैक्षिक तथा सह–शैक्षिक दोनों ही पक्षों को सम्मलित किया जाता है।

मुख्य शब्द– मूल्यांकन, मूल्यांकन की विशेषताएँ, आन्तरिक मूल्यांकन, सतत् मूल्यांकन

मूल्यांकन का अर्थ–

मूल्यांकन वस्तुतः वही साक्ष्य है जिसके आधार पर शिक्षक को अपने प्रयासों की सफलता या असफलता का बोध होता है। यह पृष्ठ पोषक का भी कार्य करता है। मूल्यांकन एक व्यापक व उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, शिक्षा के क्षेत्र में इसका सर्व प्रमुख कार्य, शिक्षा का उद्देश्य केन्द्रित बनाना है। इस प्रक्रिया के आधार पर व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मूल्यांकन वह प्रक्रिया है, जिसका सम्बन्ध शिक्षण के मापन व सीखने के उद्देश्य से होता है। मूल्यांकन का स्वरूप अत्यन्त विस्तृत होता है। जे0 डब्ल्यू0 राइटस्टोन के अनुसार– ''मूल्यांकन वह नवीन तकनीकी पद है जो मापन के व्यापक प्रत्यय को प्रस्तुत करता है।''

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– ''शिक्षा मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' 21वीं सदी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में मनुष्य–जीवन के चार स्तरों का उल्लेख किया गया है– भौतिक, बौद्धिक, मानसिक व अध्यात्मिक। अतः चहुँमुखी विकास के रूप में शिक्षा का प्रयोजन भौतिक, बौद्धिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्तरों में प्रत्येक बालक की अन्तर्निहित सम्भावनाओं को प्रकाशित करना है।

मूल्यांकन की विशेषताएँ–

- मूल्यांकन एक नवीन धारणा है।
- यह एक प्राविधिक (तकनीकी) शब्द है।
- मूल्यांकन एक विस्तृत प्रक्रिया है।
- मूल्यांकन के द्वारा छात्र की अभिरुचि, अभिवृत्ति, मानसिक योग्यता आदि व्यक्तित्व के सभी पक्षों की जाँच होती है।
- मूल्यांकन द्वारा स्थिति का वर्णन इस प्रकार से किया जाता है कि तुलनात्मक अध्ययन सम्भव हो सके।
- मूल्यांकन सम्पूर्ण शिक्षक प्रणाली का एक अंग है।
- मूल्यांकन न केवल निष्पत्तियों को आंकता है वरन् उनके आधार पर शिक्षण विधि पाठ्यवस्तु आदि को पृष्ठ पोषण प्राप्त होता है तथा उनकी उपयोगिता के सन्दर्भ में जाँचकर उसमें सुधार की जाती है।

- मूल्यांकन के आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता को स्पष्ट करने में सहायता मिलती है।
- पाठ्यक्रम के परिवर्तन व परिमार्जन में भी मूल्यांकन उपयोगी है।
- इसमें शिक्षक की सफलता/असफलता का पता लगता है।
- मूल्यांकन एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है इसके अन्तर्गत विषयवस्तु को उपयोगिता का निर्णय किया जाता है।
- मूल्यांकन व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करने वाली एक सुव्यवस्थित प्रणाली है।
- इसमें प्रश्नों द्वारा योग्यता, ज्ञान, कौशल तथा उसकी सीमाओं का ज्ञान प्राप्त होता है।
- यह शिक्षक को उद्देश्य केन्द्रित बनाता है।
- मूल्यांकन के अन्तर्गत उसके निर्णय को प्रभावित करने वाले सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है।

मूल्यांकन के द्वारा निरन्तर उद्देश्यों, शिक्षक तथा अधिगम की सार्थकता के विषय में सूचनाएँ एकत्रित की जाती है। इन सूचनाओं का उपयोग कर शिक्षा में सुधार किए जाते हैं। इसके द्वारा शिक्षा की गति में भी भिन्नता आती है, वह विकास की ओर अग्रसर होती है। मूल्यांकन, उद्देश्य तथा अधिगम, अनुभव मूल्यांकन प्रणाली के आधार हैं। ये तीनों ही एक–दूसरे पर निर्भर हैं। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, समाज की आवश्यकताओं तथा पाठ्य विषय की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षाशास्त्री राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं। इन लक्ष्यों का स्वरूप दार्शनिक होता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार– शिक्षा का प्राथमिक प्रयोजन पुरुष व महिला में पहले से ही मौजूद सम्पूर्णता को प्रकट करना है (शिक्षा मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है) 21वीं सदी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट यूनेस्को में मनुष्य–जीवन के चार स्तरों का उल्लेख किया है– भौतिक, बौद्धिक, मानसिक व आध्यात्मिक। अतः चहुँमुखी विकास के रूप में शिक्षा का प्रयोजन भौतिक, बौद्धिक व मानसिक तथा अध्यात्मिक स्तरों में प्रत्येक बालक की अन्तर्निहित सम्भावना को प्रकाशित करना है। देश में पहली बार सी0बी0एस0ई0 ने चहुँमुखी विकास के इस विशाल लक्ष्य को व्यवहार में लाने का प्रयास किया गया है। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों को आगे बढ़ाने की क्रिया है। वास्तव में प्रत्येक बालक के अन्दर जन्म के समय कुछ शक्तियाँ बीज के रूप में विद्यमान रहती हैं। उचित वातावरण के सम्पर्क में आने पर ये शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं, जबकि उचित वातावरण के अभाव में ये शक्तियाँ या तो पूर्णरूपेण विकसित नहीं हो पातीं या अवांछित रूप ले लेती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों को अन्दर से बाहर की ओर उचित दिशा में विकसित करने का प्रयास किया जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षा के द्वारा बालक की आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट किया जाता है। शिक्षा के द्वारा बालक का शारीरिक व मानसिक पक्ष सबल व सशक्त होता है। शिक्षा एक गत्यामक प्रक्रिया है।

सतत् व आन्तरिक मूल्यांकन–

सतत् व आन्तरिक मूल्यांकन का आरम्भ सर्वप्रथम भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने दिनांक 20 सितम्बर 2009 को घोषित किया गया, साथ ही अक्टूबर 2009 से कक्षा–9 के लिए सभी विद्यालयों में उपयोग की बात कही गई। परिपत्र में आगे यह भी बताया गया कि वर्तमान शैक्षिक–सत्र 2009–10 से कक्षा– 9–10 के लिए नई ग्रेडिंग प्रणाली लागू की जाएगी। दिनांक 29 सितम्बर 2009 के परिपत्र संख्या 40/29–09–2009 में उल्लिखित कक्षाओं के लिए लागू की जाने वाली ग्रेडिंग प्रणाली के सभी विवरण दिए गए। 6 अक्टूबर 2009 से सी0बी0एस0ई0 ने शिक्षक प्रशिक्षक फॉर्मेट में कार्यशालाओं के माध्यम से देशभर में सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन का प्रशिक्षण आरम्भ कर दिया गया। सतत् व व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया मूल्यांकन की वह प्रणाली है जिसमें छात्र के विकास के सभी पक्ष शामिल हैं। इस प्रक्रिया में दोहरे उद्देश्यों पर बल दिया जाता है। ये उद्देश्य व्यापक आधारित अधिगम तथा व्यवहारगत परिवर्तन (परिणामों) के मूल्यांकन की सतत्ता (निरन्तरता) में है।

सतत् शब्द का अर्थ छात्रों की ''वृद्धि और विकास'' के अभिजात पक्षों पर बल देने से है। यह सम्पूर्ण अध्यापन प्रक्रिया से सम्बन्धित है। सतत् आन्तरिक मूल्यांकन की आवश्यकता वर्तमान समय में अधिक महसूस होने लगी है। इस मूल्यांकन का प्रत्यय वस्तुतः परीक्षा सुधार के दो सिद्धान्तों पर आधारित है। प्रथम जो व्यक्ति अध्यापन कार्य करे वही व्यक्ति मूल्यांकन का कार्य भी करे तथा द्वितीय मूल्यांकन कार्य सत्रान्त में न होकर सम्पूर्ण सत्र के दौरान लगातार होता रहे। सतत् आन्तरिक मूल्यांकन में अध्यापकों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन कर रहे अध्यापकों के द्वारा सत्र के बीच–बीच में लगातार थोड़े–थोड़े अन्तराल पर किया

जाता रहता है तथा छात्रों को उनकी कमियों व सफलताओं की जानकारी दी जाती है। इससे छात्रों को पृष्ठपोषण मिलता है तथा वे अपनी क्षमता के अनुरूप सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। सतत् मूल्यांकन में अध्यापकों के द्वारा छात्रों की शैक्षिक प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए लिखित परीक्षाओं के अतिरिक्त मापन व मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियों व उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। सतत् मूल्यांकन छात्र/छात्राओं के साथ–साथ अध्यापकों को भी अपनी शिक्षण–योजना में सुधार करने के अवसर प्रदान करता है। छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान व कौशल की जानकारी के आधार पर अध्यापक भी अपनी शिक्षण स्थिति में यथावश्यक परिवर्तन कर लेता है। निःसन्देह सतत् मूल्यांकन का यह प्रत्यय न केवल परीक्षा सुधार की दृष्टि से वरन् सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में वांछित सुधार लाने की दिशा में एक सार्थक कदम है।

सतत् मूल्यांकन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. सत्त मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की निष्पत्ति में सुधार किया जा सकता है।
2. छात्रों की प्रगति का विद्यालयी तथा गैर विद्यालयी दोनों ही पक्षों का मूल्यांकन सम्भव हो पाता है।
3. इसमें विद्यालयी विषयों के साथ–साथ छात्रों की बुद्धि, अभिवृत्ति, स्वास्थ्य, अध्ययन–आदत, पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ आदि का भी अध्ययन किया जाता है।
4. इसमें छात्रों की प्रगति को बढ़ाने के लिए पृष्ठपोषण प्रविधि तथा उपचारात्मक शिक्षक, निर्देशन एवं परामर्श की भी व्यवस्था की जा सकती है।
5. यह मूल्यांकन प्रणाली छात्रों की निरन्तर अध्ययन की आदत का विकास करती है।
6. सतत् मूल्यांकन के मापन एवं मूल्यांकन की अनेक प्रविधियों व उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे– अवलोकन, साक्षात्कार निर्धारण मापनी तथा औपचारिक परीक्षाएँ इत्यादि।

सतत्मूल्यांकन में छात्र हर समय अध्यापक के निरीक्षण में रहता है तथा सभी सम्बद्ध अध्यापक छात्र के व्यवहार, आचरण, अध्ययन के सम्बन्ध में अपना मत लिखित रूप से अंकित करते हैं। इस मत को अंकों के रूप में व्यक्त किया जाता है। यद्यपि प्रत्येक सम्बद्ध अध्यापक व्यक्तिगत रूप से मूल्यांकन करता है। अतः व्यक्ति–निष्ठता का प्रश्न खड़ा होता है। परन्तु सभी अध्यापक के मूल्यांकन को एकत्रित कर उनका मध्यमान निकालकर व्यक्ति निष्ठत्व को कम किया जाता है, इसके लिए पूर्व निर्धारित चेक–लिस्ट भी उपयोग में लाई जा सकती है। समग्र या व्यापक मूल्यांकन– प्रत्येक परीक्षा प्रणाली का अपना उद्देश्य होता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति मूल्यांकन के द्वारा की जाती है। व्यापक शब्द का अर्थ है कि इस योजना में छात्रों की वृद्धि और विकास के शैक्षिक तथा सह–शैक्षिक दोनों ही पक्षों को सम्मलित किया जाता है। चूंकि क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ और अभिरुचियाँ अपने आप को लिखित शब्दों के अलावा अन्य रूपों में प्रकट करती हैं। अतः यह शब्द विभिन्न साधनों अनुप्रयोग के लिए उपयोग किया जाता है। इनका उपयोग परीक्षा और गैर परीक्षा दोनों के लिए किया जाता है। इनके द्वारा निम्नलिखित अधिगम–क्षेत्रों में छात्र के विकास का निर्धारण होता है–

- ज्ञान
- समझ या व्यापकता
- लागू करना
- विश्लेषण करना
- मूल्यांकन करना
- सृजन करना

इस प्रकार यह योजना पाठ्यचर्या सम्बन्धी एक पहल है। यह अधिगम की ओर छात्रों को ले जाने का एक अच्छा प्रयास है तथा इसका लक्ष्य अच्छे नागरिक बनाना है जिनका स्वास्थ्य अच्छा हो, उनके पास उपयुक्त कौशल व वांछित गुणों के साथ–साथ शैक्षिक विशेषताएँ भी हैं, जिससे छात्र अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना सरलता से कर सके।

छात्र की सम्पूर्ण शिक्षण–प्रक्रिया में सतत् मूल्यांकन प्रणाली को सम्मलित किया जाना अनिवार्य है परन्तु इससे यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता है कि शिक्षण–प्रक्रिया में से व्यापक या सत्रान्त बाह्य मूल्यांकन को हटा दिया जाए। प्रत्येक परीक्षा–प्रणाली का अपना उद्देश्य होता है और जो इस उद्देश्य की पूर्ति भी करता है।

व्यापक या समग्र मूल्यांकन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार है–

1. व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में दोनों की निष्पत्ति का आंकलन व्यापक रूप से किया जाता है तथा यह भी निश्चय किया जाता है कि छात्र ने पाठ्यवस्तु पर किस सीमा तक स्वामित्व प्राप्त कर लिया है?
2. व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में छात्रों को इस प्रकार के प्रश्न दिए जाते हैं कि वह अपनी सृजनात्मक व चिन्तन शक्ति का विकास कर सके।
3. व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में मौखिक, लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षाएँ सम्मलित की जाती हैं।

इससे छात्र का मूल्यांकन पूरी तरह से हो जाता है।

4. व्यापक मूल्यांकन प्रणाली में शिक्षा के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक उद्देश्यों को महत्व दिया जाता है।
5. यह औपचारिक शिक्षण–प्रक्रिया के ढंग से किसी भी व्यक्ति या अध्यापक द्वारा सम्पन्न की जा सकती है।
6. व्यापक अथवा सत्रान्त पाठ्यक्रम में प्रवेश दिलाना है।
7. व्यापक परीक्षाएँ विभिन्न शिक्षा संस्थाओं के परीक्षा–परिणामों में एकरूपता की दृष्टि से लाभदायक है।

अतः शिक्षा जगत में मूल्यांकन का बहुत महत्व है, इसके द्वारा असफलताओं का निर्णय तथा कठिनाइयों आदि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। मूल्यांकन के द्वारा ही छात्रों के भावी जीवन का पथ–प्रदर्शन किया जाता है।

और अन्त में मेरी दृष्टि में–

है प्रकार सुन्दर से इसके
सतत् और व्यापक दो
छात्र प्राप्ति के निष्कर्षों
पर मिला हुआ है फूल जो
शिक्षण के पथ पर चलकर
हम अधिगम सफल बनाएँ
छात्र की जीवन बगिया को
फूलों सा हम महकाएँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. शिक्षण तकनीकी, डा0 आर एम मिश्रा, द्वितीय संस्करण 1996, आलोक प्रकाशन 165/64ख, कच्चा हाता, अमीनाबाद, लखनऊ ब्रान्च–110, विवेकानन्द मार्ग, इलाहाबाद।
2. शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी, डा0 सीताराम जायसवाल, प्रकाशन केन्द्र रेलवे क्रासिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ – 226020
3. अधिगम के लिए आँकलन, प्रो0 रमन बिहारी लाल, श्रीमती सुनीता पलोड़, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज बेगम ब्रिज रोड, मेरठ – 250001 संकरण 2017
4. शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, डा0 मालती सारस्वत, आलोक प्रकाशन लखनऊ – इलाहाबाद, दशम संस्करण – 1997
5. शैक्षिक तकनीकी, डा0 एस. एस. माथुर, विनोद पुस्तक मन्दिर, ––हास्पीटल रोड, आगरा–3, प्रथम संस्करण 1995
6. संस्कृत एवं सूक्ष्म प्राविधिकी, प्रो0 राजेश्वर उपाध्याय एवं प्रो0 श्रीधर वशिष्ठ, डा0 हरिश्चन्द्र सिंह, भारतीय विद्या संस्थान जगतगंज वाराणसी – 221002 प्रथम संस्करण – 1992–93
7. भारतीय समाज मुद्दे एवं समस्याएँ, डा0 धर्मवीर महाजन एवं डा0 (श्रीमती) कमलेश, 2008, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–7
8. भारत में सामाजिक परिवर्तन, एम. एस. गुप्ता एवं डी. डी. शर्मा, 1987, साहित्य भवनः आगरा।
9. साहित्यिक निबन्ध, डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज मेरठ–25001
10. भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएँ प्रो. रमन बिहारी लाल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स गंगोत्री शिवाजी रोड मेरठ–250002 छठा संस्करण– 2010–11
11. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ श्री पी.डी. पाठक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, ग्यारहवाँ संस्करण 1991–921
12. शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग; प्रो0 रमन बिहारी लाल, आरलाल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण– 2006–07
13. उदीपमान भारतीय समाज में शिक्षक; एन0आर0 स्वरूप सक्सेना; डा0 शिखा चतुर्वेदी; डा0 के0पी0 पाण्डेय; आरलाल बुक डिपो; संस्करण– 2006
14. शिक्षा एवं भारतीय समाज; डा0 रामपाल सिंह, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
15. संस्कृत शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)
16. सृजनात्मकता, बुद्धि एवं व्यक्तित्व, डॉ. के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ लायल बुक डिपो, मेरठ।
17. हिन्दी शिक्षण, डॉ0 के. सी. गौड़ व डॉ. सुनीता गौड़ अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर (राजस्थान)